

यज्ञ के आरम्भ में शुद्धि प्रकरण

सञ्जय मोहन मित्तल, न्यू जर्सी

ब्रह्म यज्ञ व देव यज्ञ का आरम्भ हम आचमन और अंग स्पर्श आदि शुद्धि प्रकरणों से करते हैं। इन विधियों से हमारी प्राचीन काल से ही शुद्ध रहने की परम्पराओं की पुष्टि होती है। हमारे ऋषियों ने इन विधियों का उल्लेख कर जीवन में शुद्धि के महत्व को इंगित किया है। परन्तु क्या यह शुद्धि केवल भौतिक मात्र है या इसका कोई आत्मिक अर्थ भी है? जल शोधक है यह सर्वविदित है। जितना अधिक शुद्ध जल पियेंगे उतने ही हमारे शरीर के आन्तरिक अंग शुद्ध रहेंगे। वैसे ही नित्य प्रति शुद्ध शीतल जल से स्नान करने से शरीर में स्वच्छता बनी रहेगी। परन्तु स्नान के उपरान्त यज्ञ वेदि पर बैठते ही पुनः शुद्धि करने का क्या प्रयोजन है?

यह शुद्धि मात्र सांकेतिक रूप में भौतिक है क्योंकि इसका प्रयोजन तो कुछ और ही है और वह है विचारों और कर्मों की शुद्धि। आन्तरिक शुद्धि के लिए जल से आचमन करते हुए हम अपने ध्यान को परम पिता परमात्मा पर केन्द्रित करते हुए विचारों को शुद्ध करने का प्रयत्न कर रहे हैं। हम प्रार्थना कर रहे हैं कि हमारे मन में केवल धर्म के अनुकूल विचार ही जन्म लें और निवास करें, केवल ऐसे विचार जो सर्वहितकारी हों; बुरा या विनाशकारी विचार हमारे पास भी न फटकने पाए। ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि हमें ऐसे गुण प्रदान करें जिनसे हमें न्यायोचित ज्ञान, धन और यश की प्राप्ति हो।

वैसे ही बाहरी शुद्धि के लिए अंग स्पर्श के दौरान, अपने अंगों में ओज बने रहने की प्रार्थना करते हुए हम अपने कर्मों को शुद्ध रखने का वचन भी दे रहे हैं। हम वचन दे रहे हैं कि अपनी वाणी का प्रयोग केवल सत्य और हितकारी वचनों को बोलने में करेंगे; कभी भूल से भी परनिन्दा या स्वयम् की निन्दा न करेंगे। किसी की आलोचना भी इसी नियम को ध्यान में रखकर करेंगे। किसी को नीचा दिखाने के प्रयोजन से की गई आलोचना से दूर रहेंगे। इसी इन्द्रिय से किए गए खान-पान को भी शुद्ध सात्विक रखेंगे। “तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा” यजुर्वेद ४०:१ वाक्य का पालन करेंगे। अपनी श्वास को शुद्ध रखेंगे; उसे किसी भी प्रकार से धूम्र आदि के प्रदूषण से मुक्त रखेंगे। अपने नेत्रों का प्रयोग अच्छाईयाँ देखने के लिए करेंगे न कि बुराईयों की खोज में। अपने कानों का प्रयोग अच्छा सुनने के लिए ही करेंगे; परनिन्दा रसास्वादन से दूर रहेंगे। अपने हाथों का प्रयोग केवल धर्मोचित कर्मों के लिए करेंगे। अपने पैरों का प्रयोग केवल उसी जगह जाने के लिए करेंगे जहाँ जाना उचित है; अनुचित जगहों से दूर रहेंगे। और जो भी कर्म हम अपने किसी भी अंग द्वारा करेंगे वह वैदिक धर्म के अनुकूल ही होगा।

यज्ञ के आरम्भ में ही इन शुद्धि प्रकरणों में यज्ञ के प्रयोजन को रेखांकित कर दिया गया है। इसके बाद आने वाले सारे प्रकरण जैसे स्तुति उपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, अग्निहोत्र आदि इसी भाव को और गहराई में लेकर जाते हैं। स्वार्थ से ऊपर उठ अपने सारे कार्य सर्वहित में करना ही श्रीमद् भगवद्गीता का भी मूल संदेश है। यज्ञ ईश्वर प्रप्ति की सीढ़ी की पहली पायदान मात्र है। यज्ञ का महत्व केवल इतना ही है कि यह हमें धर्म मार्ग से भटकने से बचाता है। परन्तु ईश्वर की सच्ची उपासना तो केवल अच्छे कर्म करने में ही है। यज्ञ के उपरान्त स्वार्थवश कार्य करने से यज्ञ का पुण्य नष्ट हो जाता है। सब कर्म अच्छे हो तो “व्यशेमहि देवहितं यदायुः” यजुर्वेद २५:२१ को चरितार्थ करते हुए पूरा जीवन ही भक्तिमय हो जायेगा।